B.A. - II
Paper - III
Unit - IV

© Bolendra Kumar Agam
Asst Prof of Geography
Raja Singh College Siwan

भारत में जनसंख्या वृद्धि
Growth of Population in India

प्रश्न : भारत में जनसंख्या वृद्धि पर प्रकाश डालें।

उत्तर: दो समय बिन्दुओं के बीच किसी खास क्षेत्र में लोगों की संख्या में परिवर्तन ही जनसंख्या वृद्धि कहलाती है। भारत में जनसंख्या का आकार और वृद्धि बेहद भयावह है। इसे जनसंख्या विस्फोट का नाम दिया जाता है।

जनसंख्या वृद्धि दो तरह से होती है-

प्राकृतिक - यह जन्म दर और मृत्यु दर पर आधारित होता है।

प्रेरित (Induced) - इसमें प्रवास मुख्य है।

यहाँ सिर्फ प्राकृतिक वृद्धि की चर्चा है। भारत में वार्षिक और दशकीय दोनों वृद्धि काफी तीव्र है।

भारत में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

	जनगणना वर्ष	जनसंख्या	दशकीय वृद्धि %	साक्षरता	लिंगानुपात
	1901	23,83,96,327	—		972
I	1911	25,20,93,390	5.75		964
	1921	25,13,21,213	(-) 0.31		955
	1931	27,89,77,238	11.00		950
	1941	31,80,60,580	14.22		945
II	1951	36,10,88,090	13.31	18.33	946
	1961	43,92,34,771	21.64	28.30	941
	1971	54,81,59,652	24.80	34.45	930
III	1981	68,33,29,097	24.66	43.57	934
	1991	84,63,02,688	23.87	52.21	927
IV	2001	102,87,37,436	21.54	64.84	933
	2011	121,08,54,977	17.72	73.00	943

भारत की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न रही है। इसे हम चार चरणों में विभाजित कर सकते हैं-

I. प्रथम चरण : सामान्य वृद्धि (1901-1921) :

इस काल में जनसंख्या में स्थिर वृद्धि और ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की गई। इस काल में जन्म दर तथा मृत्यु दर दोनों ही उच्च था।

Scanned with CamScanner

जन्म दर: 48-49 प्रति 1000 व्यक्ति
मृत्यु दर : 42-48 प्रति 1000 व्यक्ति

इन सबके निम्नलिखित कारण थे:

I) खराब स्वास्थ्य सेवा
II) खराब स्वास्थ्य
III) व्यापक अशिक्षा / असाक्षरता
IV) खाद्य और आवश्यक सेवाओं का बेतरतीब/अप्रभावी वितरण
V) दुर्भिक्ष और संक्रामक कि बीमारियाँ आदि।

1921 में जब देश की जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की गई तब इसे भारत की जनसंख्या का वृहत विभाजक वर्ष भी कहते हैं।

II. दूसरा चरण : मध्यम वृद्धि (1921-1951):

स्वास्थ्य और सफाई व्यवस्था के सुधार द्वारा मृत्यु दर में कमी आई। साथ ही बेहतर यातायात व्यवस्था ने वितरण को प्रभावी बनाया। इस काल में उच्च जन्म दर बना रहा जिससे वृद्धि दर भी अधिक रहा, पिछले चरण की अपेक्षा। इन सबके और भी कारण थे जैसे- कृषि उत्पादन में वृद्धि और दुर्भिक्ष में कमी आदि। 1920-30 की आर्थिक मंदी और 1939-45 के द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भी यह वृद्धि काफी प्रभावी रहा।

III तीसरा चरण : तीव्र वृद्धि (1951-81):

भारत में यह काल जनसंख्या विस्फोट के नाम से जानी जाती है। आजादी के बाद पहली बार वार्षिक वृद्धि दर 2.2 रही जो आश्चर्यजनक है। इन सबके निम्नलिखित कारण हैं-

I) जन्म दर का उच्च बने रहना
II) मृत्यु दर में तीव्र कमी
III) आजादी के बाद विकास परियोजनाओं का शुरू होना
IV) केन्द्रीय नियोजन
V) आर्थिक उन्नति के साथ ही व्यक्तिक जीवन स्तर में व्यापक विकास
VI) तिब्बत, बांग्लादेश, नेपाल और पाकिस्तान से भारत में प्रवास आदि उपरोक्त कारकों ने उच्च जनसंख्या वृद्धि में योगदान दिया।

Scanned with CamScanner

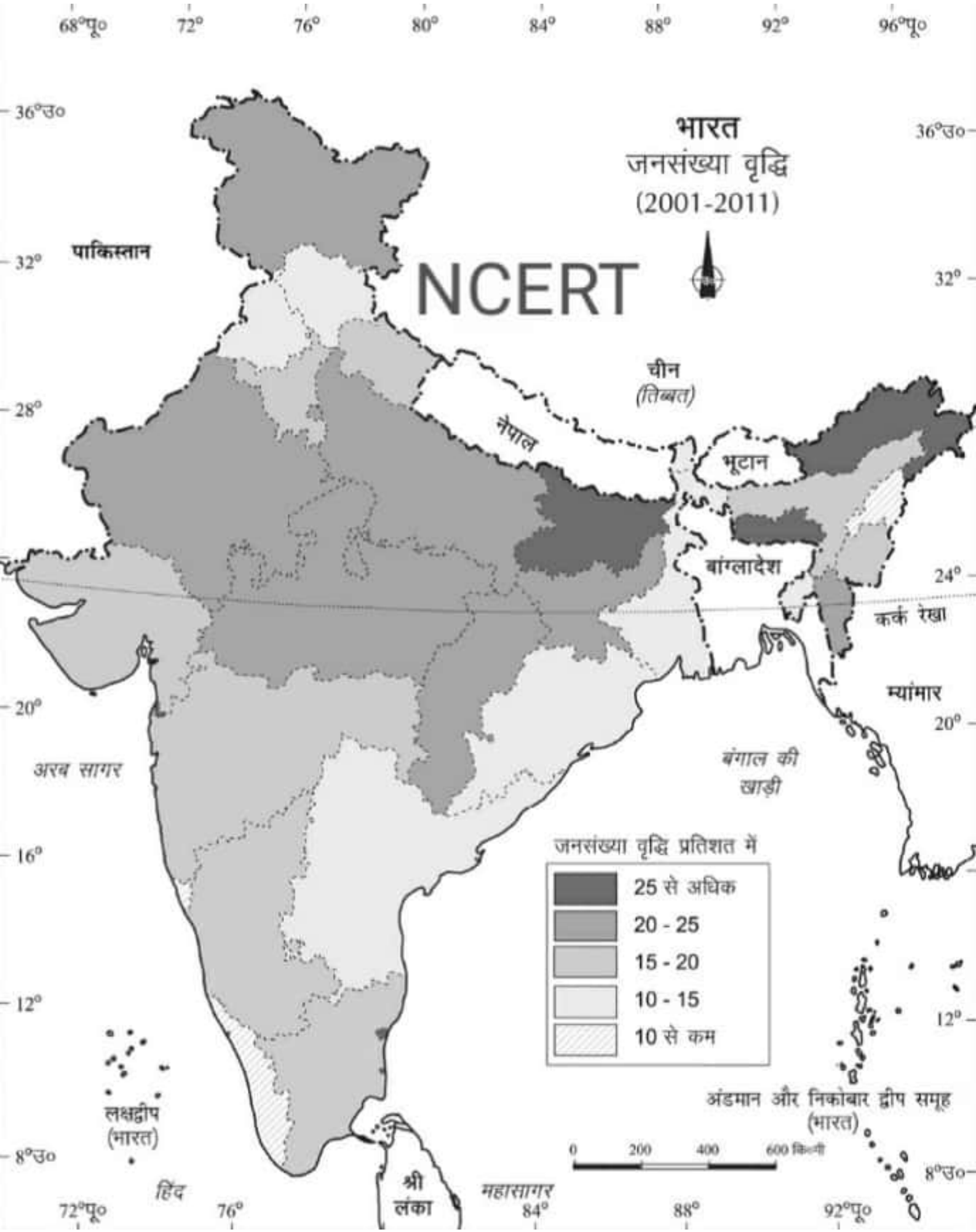

Scanned with CamScanner

IV चौथा चरण : 1981 – 2011

1981 के बाद भारत की जनसंख्या वृद्धि दरतीसरे आना प्रारंभ हो गयी है हलांकि आधार बड़ा होने कारण वृद्धि अधिक बड़ा दिखाई दे रही है। भारत की जनसंख्या जनसांकिकी संक्रमण की तीसरी अवस्था में प्रवेश कर गई है।

वर्तमान में जन्मदर – 21.4/1000

मृत्यु दर – 7/1000

इस प्रकार अभी भी जनसंख्या वृद्धि की गति तेज ही है जिसके निम्न कारण है:

i) अकाल पर नियंत्रण
ii) चिकित्सा में सुधार
iii) जन्मदर अधिक होना – सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारक और गर्म जलवायु
iv) औसत आयु अर्थात् जीवन प्रत्याशा में वृद्धि आदि।

जनसंख्या वृद्धि में क्षेत्रीय भिन्नता

1991 के बाद भारत में जनसंख्या वृद्धि दर कम होती जा रही है। भारत के राज्यों को वृद्धि दर के हिसाब से निम्न रूप से विभाजित कर सकते हैं।

कम वृद्धिवाले राज्य

इसमें वैसे राज्यों को रखते हैं जो 20% से कम दशकीय वृद्धि दर्ज की है जैसे – केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, पांडिचेरी, गोवा आदि।

उच्च वृद्धि दर वाले राज्य

इसमें वैसे राज्यों को रखते है जिनका वृद्धि दर 20-25% के बीच है जैसे – गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, सिक्किम, असम, प. बंगाल, बिहार, छत्तीसगढ़ और झारखण्ड आदि।

इस प्रकार 1991–2001 की अपेक्षा 2001–2011 में संपूर्ण भारत की जनसंख्या वृद्धिदरकम रही है और आशा कर सकते हैं कि देश जनसांकिकी संक्रमण के चौथे चरण में प्रवेश कर चुका है।